P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन का अध्ययन

बलवान सिंह
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

रविकान्त यादव
वरिष्ठ व्याख्याता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
हरिभाउ उपाध्याय महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, (सीटीई)
हटूण्डी, अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 200 छात्र तथा 200 छात्राएं हैं। अध्ययन के परिमाणों से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं समायोजन में समानता पायी जाती है। जबकि शैक्षिक निष्पत्ति में असमानता पायी जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालय वातावरण के मापन हेतु डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण परिसूची एवं समायोजन के मापन हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। शैक्षिक निष्पत्ति के मापन हेतु कक्षा 10 के बोर्ड प्राप्तांको को लिया गया है।

मुख्य शब्द : माध्यमिक स्तर, विद्यालय वातावरण, समायोजन, शैक्षिक निष्पत्ति।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली हैं शिक्षा के पथ पर चलकर ही व्यक्ति सत्य की मंजिल पर पहुंचता है। अर्थात् शिक्षा वह माध्यम है जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे एक योग्य एवं संस्कारित नागरिक बनाती है। व्यक्ति का नैतिक, सामाजिक, चारित्रिक, संवेगात्मक एवं व्यवसायिक विकास करना शिक्षा का उद्देश्य है। ज्ञान का उजाला ही मनुष्य के जीवन में फैले अज्ञान के अंधकार को मिटाता है। शिक्षा का अमृत ही मानव को इस नश्वर संसार मे अमरत्व प्रदान करता है। हमारे त्रिकालज्ञ मनीषियों ने हमें जो दृष्टिकोण दिया उनके अनुसार विद्या मात्र जानकारियों का पुलिन्दा नहीं, मात्र विवरणात्मक ज्ञान नहीं प्रत्युत मानव को जन्म के सही लक्ष्य की ओर ले जानी वाली चिरन्तर उर्जा है। शिक्षा ज्ञान का काजल बने, दृष्टि तथा दृष्टिकोण की स्वच्छता में हमने जीवन की सप्तपदी यात्रा को पूर्ण किया। हम प्रकाश और सत्य की और अग्रसर हुए, अंधकार तथा असत्य की ओर नहीं। शिक्षा तथा जीवन के उद्देश्य में कोई अन्तर बोध नहीं है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सके, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।

प्रत्येक व्यक्ति शिशु के रूप में कुछ पाशविक प्रवृतियां लेकर इस असहाय विश्व में जन्म लेता है। शिक्षा के माध्यम से ही इन पाशविक प्रवृतियों का शोधन एवं मार्गान्तीकरण होता है, और वह मनुष्य बनता है। महाराजा भर्तृहरि के अनुसार ''विद्याहीन नर पशु के समानः'' अर्थात विद्या के अभाव में मनुष्य पशु के समान है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''शिक्षा मनुष्य के अन्दर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।'' अतः शिक्षा ही संस्कृति और सभ्यता की जननी है। शिक्षा व्यक्ति के अज्ञानता रूपी अंधेरे को समाप्त कर उसे उन्नति रूपी प्रकाश की और ले जाती है। शिक्षा ही उचित–अनुचित में अंतर करने की दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति को राम के मार्ग का अनुगामी होने और रावण के मार्ग पर न चलने की सीख देती है। शिक्षा मानव को अतीत जीवन की सफलता एवं विफलता से परिचित कराकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना है। शिक्षा के मेघ ही जीवन में यश, कीर्ति, सम्मान एवं सफलता की हरियाली लाते है। हितोपदेश में शिक्षा के महत्व के बारे कहा गया है कि वह माता शत्रु है और पिता बैरी है जो अपने बच्चे को शिक्षा से वंचित रखता है क्योंकि वह बालक विद्वानों की सभा में उसी तरह शोभा नहीं पाता, जिस प्रकार हंसों के बीच में बगुला शोभा प्राप्त नहीं करता। जन्म के समय बच्चा बगुले के समान ही होता, लेकिन माता–पिता और

शिक्षक मिलकर उसे शिक्षा के द्वारा हंस बनाते है जिससे बालक नीर–क्षीर विवेकी बन सके।

वर्तमान समय में कई प्रकार के विद्यालय समाज में संचालित हो रहे हैं। इनमें अंग्रेजी माध्यम, हिन्दी माध्यम, आवासीय विद्यालय, निजी विद्यालय एवं राजकीय विद्यालय आदि प्रमुख हैं। इन विद्यालयों में शिक्षकों की योग्यता, विद्यालय परिवेश में सुविधाओं का समावेश, शिक्षकों का चरित्र, विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण, विद्यालय की प्रतिस्पर्धात्मक प्रवत्ति, अभिभावकों का शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर आदि के द्वारा वातावरण निर्मित होता है। प्रत्येक माता–पिता एक विद्यालय से यह अपेक्षा करता है कि विद्यालय का शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक वातावरण उच्च कोटि का हो ताकि उसमें अध्ययनरत उनके बालकों पर उत्तम प्रभाव पड़े और वे उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकें एवं भविष्य में परिवार, समाज एवं अपने कार्यस्थल में सुसमायोजित हो सकें। विद्यालय वातावरण का एक विद्यार्थी की भावी उन्नति में अहम् प्रभाव पड़ता है। विद्यालय वह पवित्र हवन शाला हैं जिसमें शिक्षकों के मस्तिष्क में उपस्थित ज्ञान एवम् अनुभव का हवन होता हैं और उसकी ज्वालाओं से सुनागरिकों का निर्माण होता हैं हवन शाला की सुगन्ध से समाज मदमस्त होता है। अपने पूरे सेवाकाल में अध्यापक ज्ञान की आहूति देता रहता हैं। विद्यालय, विद्यार्थियों-को जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करने तथा राष्ट्रीय एकता और नागरिकता का पाठ पढाकर, उनका नैतिक जीवन ऊंचा उठाने में मदद करता है। विद्यालय विद्यार्थियों में-सामाजिक भावना का विकास, ज्ञान का उचित उपयोग, विद्याार्थियों में-निहित योग्यताओं व क्षमताओं का विकास, शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि, स्वतंत्र विचारधाराओं का विकास करने के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करता है। तथा साथ ही उनमें समायोजन क्षमता का भी विकास करता है। बालक का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक विकसित होता है तथा उसका अधिकांश समय विद्यालय में ही व्यतीत होता है। शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है। प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवम् विकास एक निश्चित वातावरण में होता हैं। इस वातावरण का उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियां विकसित होती है। बालक की अंर्तिनिहित शक्तियों के विकास के आधार पर ही वह उपलब्धि प्राप्त करता है जिसका उनके समायोजन पर परिमाणात्मक एवं गुणात्मक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन की आवश्यकता

किसी भी देश की उन्नति व विकास उसके भावी नागरिकों पर निर्भर करता है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र व उसकी शैक्षिक संस्थायें यह प्रयास करती हैं कि उनके छात्र–छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो। इसके लिये आवश्यक है कि बालक की विभिन्न शक्तियों व प्रवृत्तियों को भली प्रकार अभिव्यक्त व विकसित होने का अवसर दिया जाये। वर्तमान में माता–पिता एवं शिक्षकों के सामने एक बड़ी समस्या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन से संबंधित है क्योंकि इस स्तर पर बालक को अपने भविष्य को संवारने के लिये एक आधार प्राप्त हो जाता है और इस आधार का प्रयोग करके बालक अपनी शैक्षिक निष्पति में वृद्धि कर सकता है।

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली था। देश धन–धान्य से पूर्ण था और शोर्य, पराक्रम में अद्वितीय था। भारत में अपार सम्पदा इसलिए थी कि भारत ज्ञान–विज्ञान से संपुष्ट था। भारत का वैभव उसकी शिक्षा पद्धति के कारण था। आज शिक्षा को विकास से, जोड़ा जा रहा है। कहा जाता है कि वह राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। आज का मानव अनेक परिस्थितियों से घिरा हुआ है। उसकी आवश्यकताएँ इस भौतिक युग में अनंत हैं। वह अपने साधनों के द्वारा इन आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा है। परन्तु यह जटिल प्रश्न है कि क्या आज का मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। यह आज की सामाजिक अव्यवस्था को देखते हुए असम्भव प्रतीत होता है। फिर भी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपनी बुद्धि से अपने समय के अनुसार करता रहता है और अपना समायोजन स्थापित करता है। इस प्रकार से हम देखते हैं कि वर्तमान तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास ने मानव को भौतिकता एवं विशालता के घेरे में खड़ा कर दिया है। इस कारण मानव जीवन में तनाव एवं कुण्ठाएँ बढ़ती जा रही हैं। आज जीवन की गति इतनी तीव्र हो चुकी है कि व्यक्ति पग–पग पर बाधा अनुभव करता है। सामाजिक परिवर्तन भी इतनी तेजी से हो रहा है कि परम्परागत सामाजिक मूल्यों का व्यक्ति के जीवन में स्थान सूना हो चला है और वह आज नये मूल्यों की तलाश में भटक रहा है। आज मनोवैज्ञानिक शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य यही है कि वह मानव में सुसमायोजन प्राप्त करने की क्षमता एवं योग्यता प्राप्त करने का विकास कर सके। यही कारण है कि आज शिक्षा जगत में व्यक्ति को अधिक महत्व प्रदान किया जाता है। आज की शताब्दी मानव के विकास में अपना अनूठा स्थान रखती है। ज्ञान के विस्फोट के साथ आज मानव व्यवहार की प्रक्रिया, रूचि, कार्य कुशलता, उपलब्धि स्तर, व्यक्तित्व विकास, समायोजन क्षमता आदि के साथ आबद्ध कर विद्यार्थियों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाने लगा है। आज बालकों की उपलब्धि अर्जन क्षमता तथा समायोजन स्थापित करने की प्रवृत्ति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। विद्यार्थियों का अच्छी प्रकार से सम्पूर्ण विकास तभी हो सकता है, जब विद्यालय वातावरण अच्छा हो तथा जिससे विद्यार्थियों के जीवन को सही दिशा प्राप्त हो सके।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नही है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में संवेक्षण विधि प्रयुक्त की गई है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालय वातावरण के अध्ययन हेतु डॉ करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण परिसूची तथा समायोजन हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी और शैक्षिक निष्पति के मापन हेतु कक्षा 10 के बोर्ड प्राप्ताकों को लिया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के आधार पर चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध कार्य में मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नही है।

तालिका संख्या – 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	200	193.86	36.47		
गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	200	191.69	27.85	0.67	स्वीकृत

$df = N_1+N_2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398$

उपरोक्त तालिका संख्या 1 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण को दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि df 398 का क्रान्तिक अनुपात मान 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.97 व 2.59 है। गणना करने पर क्रान्तिक अनुपात 0.67 प्राप्त हुआ, जो कि क्रान्तिक अनुपात मान के दोनों स्तरों से कम है, अतः निराकरणीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं है", स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	200	17.05	9.36		
गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	200	17.19	9.39	0.79	स्वीकृत

$df = N_1+N_2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398$

उपरोक्त तालिका संख्या 2 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन को दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि df 398 का क्रान्तिक अनुपात मान 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.97 व 2.59 है। गणना करने पर क्रान्तिक अनुपात 0.794 प्राप्त हुआ, जो कि क्रान्तिक अनुपात मान के दोनों स्तरों से कम है, अतः निराकरणीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	200	64.18	8.68		
गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	200	67.81	11.37	3.59	अस्वीकृत

$df = N_1+N_2 – 2 = 200 + 200 – 2 = 398$

उपरोक्त तालिका संख्या 4.9 माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को दर्शाती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि df 398 का क्रान्तिक अनुपात मान 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.97 व 2.59 है। गणना करने पर क्रान्तिक अनुपात 3.594 प्राप्त हुआ, जो कि क्रान्तिक अनुपात मान के दोनों स्तरों से अधिक है, अतः निराकरणीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है", अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यालय वातावरण संबंधी आयामों सृजनात्मक उद्दीपन, ज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकृति, अनुज्ञेयता, अस्वीकृति एवं नियंत्रण में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में एकरूपता पायी जाती है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में एकरूपता पायी जाती है।
3. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गैर सरकारी विद्यालय का वातावरण सरकारी विद्यालय के वातावरण की तुलना में अध्ययन के लिए श्रेष्ठ है। गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी लगन से अधिक परिश्रम करके अपने अध्ययन में ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत करते हैं। साथ ही गैर सरकारी विद्यालय के प्राचार्य एवं अध्यापक अपने विद्यालय की प्रशंसा करने में, विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के निर्माण में, समय से पूर्व अध्ययन कार्य पूर्ण करने में तथा अपने अध्ययन के प्रति जागरूक रहने में अधिक ध्यान देते हैं, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक निष्पत्ति संबंधी कारकों में माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में विभिन्नता पायी जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1973) : ''शिक्षा में शोध'', प्रेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि., नई दिल्ली।

गांगुली, मालविका (1992) : ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के कारकों का अध्ययन'' फिफ्थ सर्वे ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च, 1998–92

चौहान, शिवाजी (2004) : ''स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' भारतीय आधुनिक शिक्षा, 31 (3), 156–160

कपिल एच.के. (2004) : ''अनुसंधान विधियाँ'' हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।

सिन्हा, रशिम (2007) : ''अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पति, अभिप्रेरणा'' इण्डियन जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च, 23(1), 13–14

सिंह अरूण कुमार (2013) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।